16

रीढ़ की हड्डी
(जगदीशचन्द्र माथुर)

भारतीय समाज में विवाह एक महत्वपूर्ण संस्कार है। पारंपरिक रूप से विवाह-प्रक्रिया में दो परिवारों को केंद्र में रखकर निर्णय लिए जाते हैं। विवाह के फैसले में स्त्री की सहमति कई बार महत्वपूर्ण नहीं समझी जाती। सारे सद्‌गुणों की अपेक्षा लड़की से ही की जाती है। विवाह संस्कार के संदर्भ में स्त्री की भावनाओं और विचारों की उपेक्षा करना स्वस्थ समाज के लिए एक चुनौती है। विवाह का बंधन स्थायी माना जाता है और संबंधों में मज़बूती बनाए रखने के लिए स्त्री और पुरुष दोनों की बराबरी आवश्यक है। समस्या तब आती है जब पुरुष वर्ग अपना प्रभुत्व जमाने की कोशिश करता है और स्त्री को महत्व नहीं देता। यही बात परिवारिक तनाव का कारण भी बनती है।

आइए, इस पाठ में एक एकांकी के माध्यम से समाज में स्त्री की स्थिति और उसके प्रतिकार को समझने का प्रयास करें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- विवाह से संबंधित अवांछनीय प्रथाओं पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- विवाह-संबंध में स्त्री की अहम भूमिका का वर्णन कर सकेंगे;
- एकांकी के तत्त्वों के आधार पर पाठ का विश्लेषण कर सकेंगे;
- संवाद और भाषा-शैली के विविध पक्षों को उद्‌घाटित कर सकेंगे।

क्रियाकलाप 16.1

किन्हीं पाँच महिला रचनाकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व से संबंधित जानकारी एकत्रित कीजिए और उनके चित्रों के साथ एक परियोजना बनाइए।

टिप्पणी

16.1 मूल पाठ

मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाजे से आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आ रही है वे अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं, एक तख्त को पकड़े हुए पीछे की ओर चलते-चलते कमरे में आते हैं। तख्त का दूसरा सिरा उनके नौकर ने पकड़ रखा है।

बाबू : अबे धीरे-धीरे चल...अब तख्त को उधर मोड़ दे... उधर... बस, बस!

नौकर : बिछा दूँ साहब?

बाबू : (जरा तेज आवाज में) और क्या करेगा? परमात्मा के यहाँ अक्ल बँट रही थी तो तू देर से पहुँचा था क्या?... बिछा दूँ साब!... और यह पसीना किसलिए बहाया है?

नौकर : (तख्त बिछाता है) ही-ही-ही।

बाबू : हँसता क्यों है?... अबे, हमने भी जवानी में कसरतें की हैं, कलसों से नहाता था लोटों की तरह। यह तख्त क्या चीज है?... उसे सीधा कर ...यों ...हाँ बस। ...और सुन, बहू जी से दरी माँग ला, इसके ऊपर बिछाने के लिए। चद्दर भी, कल जो धोबी के यहाँ से आई है, वही। *(नौकर जाता है। बाबू साहब इस बीच में मेजपोश ठीक करते हैं। एक झाड़न से गुलदस्ते को साफ करते हैं। कुर्सियों पर भी दो चार हाथ लगाते हैं। सहसा घर की मालकिन प्रेमा आती हैं। गंदुमी रंग, छोटा कद। चेहरे और आवाज से जाहिर होता है किसी काम में बहुत व्यस्त हैं। उनके पीछे-पीछे भीगी बिल्ली की तरह नौकर आ रहा है-खाली हाथ। बाबू साहब (रामस्वरूप) दोनों तरफ देखने लगते हैं...)*

प्रेमा : मैं कहती हूँ तुम्हें इस वक्त धोती की क्या जरूरत पड़ गई! एक तो वैसे ही जल्दी-जल्दी में...

रामस्वरूप : धोती?

प्रेमा : हाँ, अभी तो बदलकर आए हो, और फिर न जाने किसलिए...

रामस्वरूप : लेकिन तुमसे धोती माँगी किसने?

प्रेमा : यही तो कह रहा था रतन।

रामस्वरूप : क्यों बे रतन, तेरे कानों में डाट लगी है क्या? मैंने कहा था- धोबी के यहाँ से जो चद्दर आई है, उसे माँग ला... अब तेरे लिए दूसरा दिमाग कहाँ से लाऊँ। उल्लू कहीं का।

प्रेमा : अच्छा, जा पूजावाली कोठरी में लकड़ी के बक्स के ऊपर धुले हुए कपड़े रखे हैं न! उन्हीं में से एक चद्दर उठा ला।

रतन : और दरी?

शब्दार्थ

कलसे – तांबे के पानी भरने वाला घड़े जैसा पात्र
मेजपोश – मेज पर बिछाने का कपड़ा। टेबल क्लाथ
झाड़न – चीजों पर से धूल झाड़ने का कपड़ा
गंदुमी – गेहुँआ रंग
लाड़ली – प्यारी, दुलारी
मर्ज – बीमारी
जतन - प्रयास
स्त्री सुबोधिनी– स्त्रियों के लिए आरंभिक पोथी (पुस्तक) जिसमें सद्गृहणी बनने की सीख दी जाती है।
ठिठोली – मजाक
टीमटाम – दिखावा
पौडर – पाउडर
बाज आना– तंग होना, हार मान लेना
इंट्रेंस – मैट्रिक
कतई – ज़रा भी
जिक्र – उल्लेख, चर्चा
बाजा – हारमोनियम
करीने से – ढंग से
दकियानूसी– पुरातनपंथी/पुराने विचारों के
तालीम – शिक्षा
चौपट – बरबाद
मुखातिब – उन्मुख
बालाई – दूध से बनी एक मिठाई
जब्त – संयत
तकल्लुफ – कष्ट/औपचारिकता
काबिल – योग्य
विलायती – विदेशी

टिप्पणी

जायका – स्वाद
तश्तरी – प्लेट
एहसान – कृपा
जायचा – कुंडली/जन्मपत्री
ऊँची तालीम– उच्च शिक्षा
ताक – कुछ रखने के लिए दीवार में बनी छोटी जगह
इर्द-गिर्द – आस-पास
रूआँसापन– चेहरे पर रोने के भाव
तब्दील – परिवर्तित
सिसकी – धीरे-धीरे रोना

प्रेमा : दरी यहीं तो रक्खी है, कोने में। वह पड़ी तो है।

रामस्वरूप : *(दरी उठाते हुए)* और बीबी जी के कमरे में से हरिमोनियम उठा ला, और सितार भी।... जल्दी जा।

(रतन जाता है। पति-पत्नी तख्त पर दरी बिछाते हैं।)

प्रेमा : लेकिन वह तुम्हारी लाड़ली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।

रामस्वरूप : मुँह फुलाए!... और तुम उसकी माँ, किस मर्ज की दवा हो? जैसे-तैसे करके तो वे लोग पकड़ में आए हैं। अब तुम्हारी बेवकूफी से सारी मेहनत बेकार जाए तो मुझे दोष मत देना।

प्रेमा : तो मैं ही क्या करूँ? सारे जतन करके तो हार गई। तुम्हीं ने उसे पढ़ा-लिखाकर इतना सिर चढ़ा रखा है। मेरी समझ में तो ये पढ़ाई-लिखाई के जंजाल आते नहीं। अपना जमाना अच्छा था। 'आ ई' पढ़ ली, गिनती सीख ली और बहुत हुआ तो 'स्त्री-सुबोधिनी' पढ़ ली। सच पूछो तो 'स्त्री-सुबोधिनी' में ऐसी-ऐसी बातें लिखी हैं- ऐसी बातें कि क्या तुम्हारी बी. ए., एम.ए. की पढ़ाई होगी। और आजकल के तो लच्छन ही अनोखे हैं...

रामस्वरूप : ग्रामोफोन बाजा होता है न?

प्रेमा : क्यों?

रामस्वरूप : दो तरह का होता है। एक तो आदमी का बनाया हुआ। उसे एक बार चलाकर जब चाहे तब रोक लो। और दूसरा परमात्मा का बनाया हुआ। रिकार्ड एक बार चढ़ा तो रुकने का नाम नहीं।

प्रेमा : हटो भी। तुम्हें ठिठोली ही सूझती रहती है। यह तो होता नहीं कि उस अपनी उमा को राह पर लाते। अब देर ही कितनी रही है उन लोगों के आने में।

रामस्वरूप : तो हुआ क्या?

प्रेमा : तुम्हीं ने तो कहा था कि जरा ठीक-ठाक करके नीचे लाना। आजकल तो लड़की कितनी ही सुंदर हो, बिना टीमटाम के भला कौन पूछता है? इसी मारे मैंने तो पौडर-वौडर उसके सामने रखा था। पर उसे तो इन चीजों से न जाने किस जन्म की नफरत है। मेरा कहना था कि आँचल में मुँह लपेटकर लेट गई। भई, मैं बाज आई तुम्हारी इस लड़की से!

रामस्वरूप : न जाने कैसा इसका दिमाग है! वरना आजकल की लड़कियों के सहारे तो पौडर का कारबार चलता है।

प्रेमा : अरे मैंने तो पहले ही कहा था। इंट्रेन्स ही पास करा देते- लड़की अपने हाथ रहती, और इतनी परेशानी न उठानी पड़ती। पर तुम तो....

रामस्वरूप : *(बात काटकर)* चुप चुप... *(दरवाजे में झाँकते हुए)* तुम्हें कतई अपनी जबान

टिप्पणी

पर काबू नहीं है। कल ही यह बता दिया था कि उन सब लोगों के सामने जिक्र और ढंग से होगा। मगर तुम तो अभी से सब-कुछ उगले देती हो। उनके आने तक तो न जाने क्या हाल करोगी!

प्रेमा : अच्छा बाबा, मैं न बोलूँगी। जैसी तुम्हारी मर्जी हो, करना। बस मुझे तो मेरा काम बता दो।

रामस्वरूप : तो उमा को जैसे हो तैयार कर लो। न सही पौडर। वैसे कौन बुरी है। पान लेकर भेज देना उसे। और, नाश्ता तो तैयार है न? *(रतन का आना)* आ गया रतन?.... इधर ला, इधर! बाजा नीचे रख दे। चद्दर खोल... पकड़ तो जरा उधर से।

(चद्दर बिछाते हैं।)

प्रेमा : नाश्ता तो तैयार है। मिठाई तो वे लोग ज्यादा खाएँगे नहीं। कुछ नमकीन चीजें बना दी हैं। फल रखे हैं ही। चाय तैयार है, और टोस्ट भी। मगर हाँ, मक्खन? मक्खन तो आया ही नहीं।

रामस्वरूप : क्या कहा? मक्खन नहीं आया? तुम्हें भी किस वक्त याद आई है। जानती हो कि मक्खन वाले की दुकान दूर है, पर तुम्हें तो ठीक वक्त पर कोई बात सूझती ही नहीं। अब बताओ, रतन मक्खन लाए कि यहाँ का काम करे। दफ्तर के चपरासी से कहा था आने के लिए, सो नखरों के मारे...

प्रेमा : यहाँ का काम कौन ज्यादा है? कमरा तो सब ठीक-ठाक है ही। बाजा-सितार आ ही गया। नाश्ता यहाँ बराबर वाले कमरे में ट्रे में रखा हुआ है, सो तुम्हें पकड़ा दूँगी। एकाध चीज खुद ले आना। इतनी देर में रतन मक्खन ले ही आएगा... दो आदमी ही तो हैं।

रामस्वरूप : हाँ एक तो बाबू गोपाल प्रसाद और दूसरा खुद लड़का है। देखो, उमा से कह देना कि जरा करीने से आए। ये लोग जरा ऐसे ही है...गुस्सा तो मुझे बहुत आता है इनके दकियानूसी खयालों पर। खुद पढ़े-लिखे हैं, वकील हैं, सभा-सोसाइटियों में जाते हैं, मगर लड़की चाहते हैं ऐसी कि ज्यादा पढ़ी-लिखी न हो।

प्रेमा : और लड़का?

रामस्वरूप : बताया तो था तुम्हें। बाप सेर है तो लड़का सवा सेर। बी.एस.सी. के बाद लखनऊ में ही तो पढ़ता है, मेडिकल कालेज में। कहता है कि शादी का सवाल दूसरा है, तालीम का दूसरा। क्या करूँ मजबूरी है। मतलब अपना है वरना इन लड़कों और इनके बापों को ऐसी कोरी-कोरी सुनाता कि ये भी...

रतन : *(जो अब तक दरवाजे के पास चुपचाप खड़ा हुआ था, जल्दी-जल्दी)* बाबू जी, बाबू जी!

रामस्वरूप : क्या है?

रतन : कोई आते हैं।

रामस्वरूप : *(दरवाजे से बाहर झाँककर जल्दी मुँह अंदर करते हुए)* अरे, ए प्रेमा, वे आ भी गए। *(नौकर पर नजर पड़ते ही)* अरे, तू यहीं खड़ा है, बेवकूफ। गया नहीं मक्खन लाने? ...सब चौपट कर दिया। अबे उधर से नहीं, अंदर के दरवाजे से जा *(नौकर अंदर आता है)* ...और तुम जल्दी करो प्रेमा। उमा को समझा देना थोड़ा-सा गा देगी। *(प्रेमा जल्दी से अंदर की तरफ आती है। उसकी धोती जमीन पर रखे हुए बाजे से अटक जाती है।)*

प्रेमा : उँह। यह बाजा वह नीचे ही रख गया है, कमबख्त।

रामस्वरूप : तुम जाओ, मैं रखे देता हूँ.... जल्दी।

(प्रेमा जाती है, बाबू रामस्वरूप बाजा उठाकर रखते हैं। किवाड़ों पर दस्तक।)

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ। आइए, आइए... हँ-हँ-हँ।

(बाबू गोपाल प्रसाद और उनके लड़के शंकर का आना। आँखों से लोक चतुराई टपकती है। आवाज से मालूम होता है कि काफी अनुभवी और फितरती महाशय हैं। उनका लड़का कुछ खीस निपोरने वाले नौजवानों में से है। आवाज पतली है और खिसियाहट भरी। झुकी कमर इनकी खासियत है।)

रामस्वरूप : *(अपने दोनों हाथ मलते हुए)* हँ-हँ, इधर तशरीफ लाइए इधर। *(बाबू गोपाल प्रसाद बैठते हैं, मगर बेंत गिर पड़ता है।)*

रामस्वरूप : यह बेंत!....लाइए मुझे दीजिए। *(कोने में रख देते हैं। सब बैठते हैं।)* हँ-हँ... मकान ढूँढ़ने में तकलीफ तो नहीं हुई?

गो. प्रसाद : *(खँखार कर)* नहीं। ताँगे वाला जानता था।... और फिर हमें तो यहाँ आना ही था। रास्ता मिलता कैसे नहीं?

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ। यह तो आपकी बड़ी मेहरबानी है। मैंने आपको तकलीफ तो दी...

गो. प्रसाद : अरे नहीं साहब! जैसा मेरा काम वैसा आपका काम। आखिर लड़के की शादी तो करनी ही है। बल्कि यों कहिए कि मैंने आपके लिए खासी परेशानी कर दी!

चित्र 16.1 : उमा के साथ बातचीत करते शादी वाले

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ! यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे। हम तो आपके-हँ-हँ-सेवक ही हैं-हँ-हँ। *(थोड़ी देर बाद लड़के*

टिप्पणी

की ओर मुखातिब होकर) और कहिए, शंकर बाबू, कितने दिनों की छुट्टियाँ हैं?

शंकर : जी, कालिज की तो छुट्टियाँ नहीं हैं। 'वीक-एण्ड' में चला आया था।

रामस्वरूप : आपके कोर्स खत्म होने में तो अब सालभर रहा होगा?

शंकर : जी, यही कोई साल दो साल।

रामस्वरूप : साल दो साल?

शंकर : हँ-हँ-हँ!... जी, एकाध साल का 'मार्जिन' रखता हूँ...

गो. प्रसाद : बात यह है साहब कि यह शंकर एक साल बीमार हो गया था। क्या बताएँ, इन लोगों को इसी उम्र में सारी बीमारियाँ सताती हैं। एक हमारा जमाना था कि स्कूल से आकर दर्जनों कचौड़ियाँ उड़ा जाते थे, मगर फिर जो खाना खाने बैठते तो वैसी-की-वैसी ही भूख!

रामस्वरूप : कचौड़ियाँ भी तो उस जमाने में पैसे की दो आती थीं।

गो. प्रसाद : जनाब, यह हाल था कि चार पैसे में ढेर-सी बालाई आती थी। और अकेले दो आने की हजम करने की ताकत थी, अकेले! और अब तो बहुतेरे खेल वगैरह भी होते हैं स्कूल में। तब न कोई वॉली-बॉल जानता था, न टेनिस न बैडमिंटन। बस कभी हॉकी या क्रिकेट कुछ लोग खेला करते थे। मगर मजाल कि कोई कह जाए कि यह लड़का कमजोर है।

(शंकर और रामस्वरूप खीसें निपोरते हैं।)

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ, उस जमाने की बात ही दूसरी थी.... हँ-हँ!

गो. प्रसाद : *(जोशीली आवाज में)* और पढ़ाई का यह हाल था कि एक बार कुर्सी पर बैठे कि बारह घंटे की 'सिटिंग' हो गई, बारह घंटे! जनाब, मैं सच कहता हूँ कि उस जमाने का मैट्रिक भी वह अंग्रेजी लिखता था फर्राटे की, कि आजकल के एम.ए. भी मुकाबिला नहीं कर सकते।

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ! यह तो है ही।

गो. प्रसाद : माफ कीजिएगा बाबू रामस्वरूप, उस जमाने की जब याद आती है, अपने को जब्त करना मुश्किल हो जाता है!

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ!... जी हाँ वह तो रंगीन जमाना था, रंगीन जमाना। हँ-हँ-हँ! *(शंकर भी हीं-हीं करता है।)*

गो. प्रसाद : *(एक साथ अपनी आवाज और तरीका बदलते हुए)* अच्छा, तो साहब, 'बिजनेस' की बातचीत हो जाए।

रामस्वरूप : *(चौंककर)* बिजनेस? बिज... *(समझकर)* ओह... अच्छा, अच्छा। लेकिन जरा

नाश्ता तो कर लीजिए।

(उठते हैं।)

गो. प्रसाद : यह सब आप क्या तकल्लुफ करते हैं!

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ! तकल्लुफ किस बात का? हँ-हँ! यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ लाए। वरना मैं किस काबिल हूँ। हँ-हँ!... माफ कीजिएगा जरा। अभी हाजिर हुआ।

(अंदर जाते हैं।)

गो प्रसाद : *(थोड़ी देर बाद दबी आवाज में)* आदमी तो भला है। मकान-वकान से हैसियत भी बुरी नहीं मालूम होती। पता चले, लड़की कैसी है।

शंकर : जी....

(कुछ खँखारकर इधर-उधर देखता है।)

गो. प्रसाद : क्यों, क्या हुआ?

शंकर : कुछ नहीं।

गो. प्रसाद : झुककर क्यों बैठते हो? ब्याह तय करने आए हो, कमर सीधी करके बैठो। तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की 'बैकबोन'...

(इतने में बाबू रामस्वरूप आते हैं, हाथ में चाय की ट्रे लिए हुए। मेज पर रख देते हैं)

गो. प्रसाद : आखिर आप माने नहीं।

रामस्वरूप : *(चाय प्याले में डालते हुए)* हँ-हँ-हँ। आपको विलायती चाय पसंद है या हिंदुस्तानी?

गो. प्रसाद : नहीं-नहीं साहब, मुझे आधा दूध और आधी चाय दीजिए। और जरा चीनी ज्यादा डालिएगा। मुझे तो भई यह नया फैशन पसंद नहीं। एक तो वैसे ही चाय में पानी काफी होता है, और फिर चीनी भी नाम के लिए डाली जाए तो जायका क्या रहेगा?

रामस्वरूप : हँ-हँ, कहते तो आप सही हैं।

(प्याला पकड़ाते हैं।)

शंकर : *(खँखारकर)* सुना है, सरकार अब ज्यादा चीनी लेने वालों पर 'टैक्स' लगाएगी।

गो. प्रसाद : *(चाय पीते हुए)* हूँ। सरकार जो चाहे सो कर ले, पर अगर आमदनी करनी है तो सरकार को बस एक ही टैक्स लगाना चाहिए।

रामस्वरूप : *(शंकर को प्याला पकड़ाते हुए)* वह क्या?

टिप्पणी

गो. प्रसाद : खूबसूरती पर टैक्स! *(रामस्वरूप और शंकर हँस पड़ते हैं)* मजाक नहीं साहब, यह ऐसा टैक्स है जनाब कि देने वाले चूँ भी न करेंगे। बस शर्त यह है कि हर एक औरत पर यह छोड़ दिया जाए कि वह अपनी खूबसूरती के 'स्टैंडर्ड' के माफिक अपने ऊपर टैक्स तय कर ले। फिर देखिए, सरकार की कैसी आमदनी बढ़ती है।

रामस्वरूप : *(जोर से हँसते हुए)* वाह-वाह! खूब सोचा आपने। वाकई आजकल यह खूबसूरती का सवाल भी बेढब हो गया है। हम लोगों के जमाने में तो यह कभी उठता भी न था। *(तश्तरी गोपाल प्रसाद की तरफ बढ़ाते हैं)* लीजिए।

गो. प्रसाद : *(समोसा उठाते हुए)* कभी नहीं।

रामस्वरूप : *(शंकर की तरफ मुखातिप होकर)* आपका क्या खयाल है शंकर बाबू?

शंकर : किस मामले में?

रामस्वरूप : यही कि शादी तय करने में खूबसूरती का हिस्सा कितना होना चाहिए।

गो. प्रसाद : *(बीच में ही)* यह बात दूसरी है बाबू रामस्वरूप, मैंने आपसे पहले भी कहा था, लड़की का खूबसूरत होना निहायत जरूरी है। कैसे भी हो, चाहे पाउडर वगैरह लगाए, चाहे वैसे ही। बात यह है कि हम आप मान भी जाएँ, मगर घर की औरतें तो राजी नहीं होतीं। आपकी लड़की तो ठीक है?

रामस्वरूप : जी हाँ, वह तो अभी आप देख लीजिएगा।

गो. प्रसाद : देखना क्या। जब आपसे इतनी बातचीत हो चुकी है, तब तो यह रस्म ही समझिए।

रामस्वरूप : हँ-हँ, यह तो आपका मेरे ऊपर भारी अहसान है। हँ-हँ।

गो. प्रसाद : और जायचा (जन्मपत्र) तो मिल ही गया होगा।

रामस्वरूप : जी, जायचे का मिलना क्या मुश्किल बात है। ठाकुर जी के चरणों में रख दिया। बस, खुद-ब-खुद मिला हुआ समझिए।

गो. प्रसाद : यह ठीक कहा आपने, बिलकुल ठीक *(थोड़ी देर रुककर)* लेकिन हाँ, यह जो मेरे कानों में भनक पड़ी है, यह तो गलत है न?

रामस्वरूप : *(चौंककर)* क्या?

गो. प्रसाद : यह पढ़ाई-लिखाई के बारे में!... जी हाँ, साफ बात है साहब, हमें ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिए। मेम साहब तो रखनी नहीं, कौन भुगतेगा उनके नखरों को। बस हद से हद मैट्रिक पास होनी चाहिए... क्यों शंकर?

शंकर : जी हाँ, कोई नौकरी तो करानी नहीं।

रामस्वरूप : नौकरी का तो कोई सवाल ही नहीं उठता।

गो. प्रसाद : और क्या साहब! देखिए कुछ लोग मुझसे कहते हैं, कि जब आपने अपने लड़कों को बी.ए., तक पढ़ाया है, तब उनकी बहुएँ भी ग्रेजुएट लीजिए। भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है। अरे मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगीं और 'पालिटिक्स' वगैरह पर बहस करने लगीं तब तो हो चुकी गृहस्थी। जनाब, मोर के पंख होते हैं मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।

रामस्वरूप : जी हाँ, और मर्द के दाढ़ी होती है, औरत के नहीं।...हँ...हँ...हँ...।

(शंकर भी हँसता है, मगर गोपाल प्रसाद गंभीर हो जाते हैं।)

गो. प्रसाद : हाँ, हाँ। वह भी सही है। कहने का मतलब यह है कि कुछ बातें दुनिया में ऐसी हैं जो सिर्फ मर्दों के लिए हैं और ऊँची तालीम भी ऐसी चीजों में से एक है।

रामस्वरूप : *(शंकर से)* चाय और लीजिए।

शंकर : धन्यवाद। पी चुका।

रामस्वरूप : *(गोपाल प्रसाद से)* आप?

गो. प्रसाद : बस साहब, अब तो खत्म ही कीजिए।

रामस्वरूप : आपने तो कुछ खाया ही नहीं। चाय के साथ 'टोस्ट' नहीं थे। क्या बताएँ, वह मक्खन...

गो. प्रसाद : नाश्ता ही तो करना था साहब, कोई पेट तो भरना था नहीं। और फिर टोस्ट-वोस्ट मैं खाता भी नहीं।

रामस्वरूप : हँ...हँ। *(मेज को एक तरफ सरका देते हैं। फिर अंदर के दरवाजे की तरफ मुँह कर जरा जोर से)* अरे, जरा पान भिजवा देना...! ...सिगरेट मँगवाऊँ?

गो. प्रसाद : जी नहीं।

(पान की तश्तरी हाथों में लिए उमा आती है। सादगी के कपड़े। गर्दन झुकी हुई। बाबू गोपाल प्रसाद आँखें गड़ाकर और शंकर आँखें छिपाकर उसे ताक रहे हैं।

रामस्वरूप : ...हँ...हँ...यही. हँ...हँ, आपकी लड़की है। लाओ बेटी पान मुझे दो। *(उमा पान की तश्तरी अपने पिता को देती है। उस समय उसका चेहरा ऊपर को उठ जाता है। और नाक पर रखा हुआ सोने की रिम वाला चश्मा दीखता है। बाप-बेटे चौंक उठते हैं।)*

(गोपाल प्रसाद और शंकर-एक साथ) चश्मा!

रामस्वरूप : *(जरा सकपकाकर)* जी, वह तो...वह...पिछले महीने में इसकी आँखें दुखनी आ गई थीं, सो कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है।

गो. प्रसाद : पढ़ाई-वढ़ाई की वजह से तो नहीं है कुछ?

रामस्वरूप : नहीं साहब, वह तो मैंने अर्ज किया न।

गो. प्रसाद : हूँ। *(संतुष्ट होकर कुछ कोमल स्वर में)* बैठो बेटी।

रामस्वरूप : वहाँ बैठ जाओ उमा, उस तख्त पर, अपने बाजे-वाजे के पास। *(उमा बैठती है।)*

गो. प्रसाद : चाल में तो कुछ खराबी है नहीं। चेहरे पर भी छवि है।... हाँ, कुछ गाना-बजाना सीखा है?

रामस्वरूप : जी हाँ, सितार भी, और बाजा भी। सुनाओ तो उमा एकाध गीत सितार के साथ।

(उमा सितार उठाती है। थोड़ी देर बाद मीरा का मशहूर गीत 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई' गाना शुरू कर देती है। स्वर से जाहिर है कि गाने का अच्छा ज्ञान है। उसके स्वर में तल्लीनता आ जाती है, यहाँ तक कि उसका मस्तक उठ जाता है। उसकी आँखें शंकर की झेंपती-सी आँखों से मिल जाती हैं और वह गाते-गाते एक साथ रुक जाती है।)

रामस्वरूप : क्यों, क्या हुआ? गाने को पूरा करो उमा।

गो. प्रसाद : नहीं-नहीं साहब, काफी है। लड़की आपकी अच्छा गाती है। *उमा सितार रखकर अंदर जाने को उठती है।)*

गो. प्रसाद : अभी ठहरो, बेटी।

रामस्वरूप : थोड़ा और बैठी रहो, उमा! *(उमा बैठती है।)*

गो. प्रसाद : *(उमा से)* तो तुमने पेटिंग-वेंटिंग भी...

उमा : *(चुप)*

रामस्वरूप : हाँ, वह तो मैं आपको बताना भूल ही गया। यह जो तसवीर टँगी हुई है, कुत्ते वाली, इसी ने खींची है। और वह उस दीवार पर भी।

गो. प्रसाद : हूँ! यह तो बहुत अच्छा है। और सिलाई वगैरह?

रामस्वरूप : सिलाई तो सारे घर की इसी के जिम्मे रहती है, यहाँ तक कि मेरी कमीजें भी। हँ...हँ...हँ।

गो. प्रसाद : ठीक।...लेकिन, हाँ बेटी, तुमने कुछ इनाम-विनाम भी जीते हैं? *(उमा चुप। रामस्वरूप इशारे के लिए खाँसते हैं। लेकिन उमा चुप है उसी तरह गर्दन झुकाए। गोपाल प्रसाद अधीर हो उठते हैं और रामस्वरूप सकपकाते हैं।)*

रामस्वरूप : जवाब दो, उमा। *(गोपाल प्रसाद से)* हँ-हँ, जरा शरमाती है, इनाम तो इसने...

गो. प्रसाद : *(जरा रूखी आवाज में)* जरा इसे भी तो मुँह खोलना चाहिए।

रामस्वरूप : उमा, देखो, आप क्या कह रहे हैं। जवाब दो न।

उमा : *(हलकी लेकिन मजबूत आवाज में)* क्या जवाब दूँ बाबू जी! जब कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीदार को दिखला देता है। पसंद आ गई तो अच्छा है, वरना...

रामस्वरूप : *(चौंककर खड़े हो जाते हैं)* उमा, उमा!

उमा : अब मुझे कह लेने दीजिए बाबूजी!...ये जो महाशय मेरे खरीदार बनकर आए हैं, इनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होता? क्या उनके चोट नहीं लगती? क्या बेबस भेड़-बकरियाँ हैं, जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख-भालकर...?

गो. प्रसाद : *(ताव में आकर)* बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?

उमा : *(तेज आवाज में)* जी हाँ, और हमारी बेइज्जती नहीं होती जो आप इतनी देर से नाप-तोल कर रहे हैं? और जरा अपने इन साहबजादे से पूछिए कि अभी पिछली फरवरी में ये लड़कियों के होस्टल के इर्द-गिर्द क्यों घूम रहे थे, और वहाँ से कैसे भगाए गए थे!

शंकर : बाबू जी, चलिए।

गो. प्रसाद : लड़कियों के होस्टल में?...क्या तुम कालेज में पढ़ी हो?

(रामस्वरूप चुप!)

उमा : जी हाँ, कालेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है। कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की, और न आपके पुत्र की तरह ताक-झाँककर कायरता दिखाई है। मुझे अपनी इज्जत, अपने मान का खयाल तो है। लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे।

रामस्वरूप : उमा, उमा?

गो. प्रसाद : *(खड़े होकर गुस्से में)* बस हो चुका। बाबू रामस्वरूप, आपने मेरे साथ दगा किया। आपकी लड़की बी.ए. पास है और आपने मुझसे कहा था कि सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है। लाइए... मेरी छड़ी कहाँ है? मैं चलता हूँ *(बेंत ढूँढ़कर उठाते हैं।)* बी.ए. पास? उफ्फोह! गजब हो जाता! झूठ का भी कुछ ठिकाना है। आओ बेटे, चलो...

(दरवाजे की ओर बढ़ते हैं।)

उमा : जी हाँ, जाइए, जरूर चले जाइए। लेकिन घर जाकर जरा यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं-यानी बैकबोन, बैकबोन!

(बाबू गोपाल प्रसाद के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा है और उनके लड़के के रूलासापन। दोनों बाहर चले जाते हैं। बाबू रामस्वरूप कुर्सी पर धम से बैठ जाते हैं। उमा सहसा चुप हो जाती है। प्रेमा का घबराहट की हालत में आना।)

प्रेमा : उमा, उमा...रो रही है!

(यह सुनकर रामस्वरूप खड़े होते हैं। रतन आता है।)

रतन : बाबू जी मक्खन...

(सब रतन की तरफ देखते हैं और परदा गिरता है।)

बोध प्रश्न 16.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

1. एकांकी के आरंभ में रामस्वरूप और प्रेमा किसलिए तैयारी कर रहे थे–

   (क) अपने रिश्तेदारों के आने के लिए

   (ख) बहुत दिनों के लिए बाहर जाने के लिए

   (ग) उमा को देखने के लिए लड़केवालों के आने के लिए

   (घ) उमा की सहेलियों के आने के लिए

2. उमा के अनुसार शंकर की 'बैक बोन' क्यों नहीं थी, क्योंकि–

   (क) वह झुककर बैठता था।

   (ख) वह पढ़ाई में कमज़ोर था।

   (ग) वह पिता के सामने बोलता नहीं था।

   (घ) वह लड़कियों के हॉस्टल में ताक-झाँक करता था।

16.2 आइए समझें

यह एकांकी सामाजिक व्यवस्था की कुछ रूढ़ियों और गलत परंपराओं को हमारे सामने लाती है। विवाह भारतीय समाज व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। हमारे समाज में विवाह दो व्यक्तियों से अधिक दो परिवारों का सामाजिक संबंध होता है। वस्तुत: विवाह स्त्री और पुरुष के बीच के सर्वाधिक घनिष्ठ संबंधों में से एक है जिसमें साथ-साथ चलते हुए जीवनयात्रा पूरी करते हैं। इसलिए विवाह में लड़के-लड़की की रुचि, अरुचि का ध्यान रखना और समझदारी का होना जरूरी है।

दरअसल आज भी समाज कहीं-कहीं के इतना कठोर है कि वह लड़की की भावनाओं की अनदेखी कर उसका रूप-रंग देखकर, चलाकार, बुलवाकर विवाह के लिए उसका चयन करता है। बार-बार प्रश्न पूछकर यह भी जानना चाहता है कि घरेलू कामकाज में कितनी दक्ष है?

इस एकांकी में समाज की इसी समस्या को प्रस्तुत किया गया है। इसमें लड़की विवाह की परंपराओं और पुरुषप्रधान मानसिकता पर सवाल खड़े करती है। सवाल पूछने का उसका तरीका और साहस सभी को असहज कर देता है। लड़की का 'जवाब देना' प्राय: अशिष्टता का सूचक माना जाता है। उमा के प्रश्न और तर्क से गोपाल प्रसाद और शंकर तिलमिला जाते हैं। यह उन्हें अपनी बेइज्जती लगती है।

एकांकी पढ़ने का तरीका कविता, कहानी पढ़ने से भिन्न होता है। कविता, कहानी में केवल शब्द माध्यम होते हैं जिनके द्वारा लेखक अपनी बात कहता है जबकि एकांकी दृश्य विधा है। मंचन और अभिनय को ध्यान में रखकर इसे लिखा जाता है।

दृश्य : वह विद्या है जिसमें देखना महत्वपूर्ण होता है; जैसे-नाटक, फ़िल्म, टेलीविज़न आदि।

रंग-संकेत एकांकी के संवादों, दृश्यों के आरंभ से पहले कोष्ठक में दिए गए निर्देश; जैसे–झुककर बैठता है, मामूली तरह से सजा कमरा आदि। ये एकांकी और नाटक के मंचन या अभिनय में सहायक होते हैं।

एकांकी : नाटक का एक भेद। इसमें केवल एक ही अंक होता है। हम देखते हैं कि 'रीढ़ की हड्डी' का सारा कार्य-व्यापार (घटित होने वाली घटनाएँ) रामस्वरूप की बैठक में ही घटित होता है।

आइए, एकांकी के तत्त्वों के आधार पर इस पाठ को समझते हैं-

(क) कथावस्तु–'रीढ़ की हड्डी' एक सामाजिक एकांकी है। इसमें लड़की के विवाह को लेकर लड़की और उसके परिवार के सामने आनेवाली समस्याओं का चित्रण है। इसमें मध्यमवर्गीय परिवार की एक पढ़ी-लिखी लड़की के सामने आने वाली चुनौतियों का मर्मस्पर्शी चित्र खींचा गया है।

आइए, इस एकांकी की कथा को संक्षेप में समझते हैं-

रामस्वरूप अपनी बेटी उमा के विवाह के लिए चिंतित और प्रयासरत हैं। लड़के वाले लड़की को कई बार देख चुके हैं, लेकिन विवाह निश्चित नहीं हो पाया है। इस क्रम में गोपाल प्रसाद अपने पुत्र शंकर के साथ उमा को देखने आने वाले हैं। एकांकी के आरंभ में रामस्वरूप के घर उसी के लिए तैयारियाँ चल रही हैं। बैठक को ठीक-ठाक किया जा रहा है, नाश्ते की व्यवस्था की जा रही है। गोपाल प्रसाद और शंकर के आने पर उमा को तैयार होकर सामने बुलाया जाता है। लड़के वालों के देखने के ढंग, उनके सवालों और उमा की उच्च शिक्षा पर उनके व्यवहार से आहत होकर उमा प्रतिरोध करती है। एकांकी उसकी विवशता, क्रोध और आक्रोश के साथ समाप्त होती है। कथानक का विस्तार, चरित्र और घटनाओं के माध्यम से किया गया है। एकांकी के अंत में गोपाल प्रसाद और शंकर का जाना और रतन का मक्खन लेकर पहुँचना केवल संयोग नहीं एक नाटकीय कौशल है, जो एक ओर अपूर्णता तो दूसरी ओर पूर्णता को दर्शाता है।

पाठगत प्रश्न 16.1

1. इस एकांकी से संबंधित विषय नहीं है-

   (क) विवाहोपरांत स्त्री-पुरुष का झगड़ा

(ख) समाज का स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण

(ग) लड़की का विवाह निश्चित होने में रुकावटें

(घ) पुरुषवादी समाज में महिलाओं की स्थिति

2. उमा गाते-गाते अचानक क्यों रुक जाती है, क्योंकि

(क) वह गाना भूल जाती है

(ख) वह अब और नहीं गाना चाहती

(ग) वह शंकर को पहचान लेती है

(घ) रामस्वरूप उसे रुकने का संकेत करते हैं

(ख) चरित्र-चित्रण– 'रीढ़ की हड्डी' में पात्रों की संख्या सीमित है जो एकांकी के अनुकूल है। अधिकांश पात्र सामान्य एवं मध्यवर्गीय पृष्ठभूमि के हैं।

आइए, कुछ पात्रों की विशेषताओं को समझते हैं-

रामस्वरूप: रामस्वरूप, उमा के पिता हैं–एक सामान्य पिता जो अपनी बेटी के विवाह के लिए चिंतित एवं प्रयासरत हैं। कई लड़के वाले आकर देख चुके हैं पर विवाह तय नहीं हो सका है। अपनी परेशानी के चलते वे कभी पत्नी को डाँटते हैं तो कभी नौकर पर झल्लाते हैं। सरकारी कर्मचारी हैं तो अपने नौकर से घर का काम कराना भी खूब जानते हैं। वे भी मानते हैं कि लड़कियों का सुंदर होना ज़रूरी है, चाहे 'पौडर' लगा कर ही क्यों न सुंदर दिखें। वे पुराने ख्यालों के नहीं हैं पर लड़के वालों के सामने यह सच नहीं बता पाते कि उनकी बेटी उच्च शिक्षित है, और इसे छिपाते हैं। शादी किसी तरह हो जाए इसलिए गोपाल प्रसाद की सभी बातों में हामी भरते हैं।

रामस्वरूप मध्यवर्गीय मानसिकता वाले सुविधाजीवी व्यक्ति हैं जो मान्यताओं को अपनी सुविधानुसार स्वीकारते हैं। कुंडली मिलाना विवाह के लिए आवश्यक है, इसे वे मानते हैं किंतु कुंडली न मिलने से विवाह में समस्या न आए, इसके लिए वह तर्क देते हैं- 'ठाकुर जी के चरणों में रख दिया तो कुंडली मिली समझिए।'

गोपाल प्रसाद : गोपाल प्रसाद शंकर के पिता हैं। बेटे का विवाह वे खुद तय करना चाहते हैं। महिलाओं की उच्च शिक्षा के घोर विरोधी हैं। वे मानते है कि महिलाओं की जगह केवल चौके-चूल्हे तक ही होनी चाहिए। अगर महिलाएँ भी 'पालिटिक्स' पर बहस करने लगेंगी तो अनर्थ हो जाएगा। वे यह भी मानते हैं कि पढ़ना-लिखना और काबिल होना केवल मर्दों का ही काम है। गोपाल प्रसाद के अनुसार कुछ चीजों पर केवल पुरुषों का ही एकाधिकार है–शिक्षा उनमें से एक है। इसके लिए वे कई तर्क देते हैं। एक टिपिकल पिता हैं जिनके आगे उनका बेटा दबकर रहता है और सही बात भी बोल नहीं पाता। गोपाल प्रसाद मुँह के मीठे हैं किंतु नजरों के तेज और चालाक। विवाह उनके लिए एक 'बिजनेस' है। वे वाचाल हैं, डीगें

मारने की उन्हें आदत है। कॉलेज के दिनों में उनकी पढ़ने की 'सीटिंग' बारह घंटे की होती थी, कलसों से नहाते थे और खेलकूल आदि में आगे थे आदि।

वे मानते थे कि सुंदरता महिलाओं का अनिवार्य गुण है। वह उनमें किसी भी कीमत पर होना ही चाहिए। दोहरी मानसिकता के व्यक्ति थे। वे बेटे के विवाह के लिए उमा को नाप-तौल की दृष्टि से देखते हैं जैसे वह कोई वस्तु हो।

उमा : उमा एकांकी की महत्वपूर्ण पात्र है। वह एक सामान्य लड़की है जो उच्च शिक्षित है। लड़के वाले उसे कई बार देख चुके हैं लेकिन विवाह निश्चित नहीं हो पाया है। एक समान की तरह बार-बार उसे लड़के वालों को दिखाया जाना बुरा लगता है। इसलिए देखने-दिखाने में अब उसकी कोई रुचि नहीं। लड़के वाले उसमें सभी गुणों की अपेक्षा करते हैं–सिलाई-बुनाई, पेटिंग और गाना आदि। वह बार-बार महसूस करती है जैसे विवाह के बाज़ार में लड़केवाले खरीदार हों और लड़कियाँ कोई वस्तु। जिनकी न कोई इच्छा है, न कोई मोल।

उमा का गोपाल प्रसाद से सीधे प्रश्न करना और जवाब देना, उन्हें अपनी बेइज़्ज़ती लगती है। उमा आधुनिक स्त्री है जिसका अपना व्यक्तित्व है, अपने विचार हैं, रुचि-अरुचि है और सच्ची बात कहने का साहस भी। बेबसी, पीड़ा, असमर्थता एवं आक्रोश उमा के चरित्र के कई आयाम हैं। ये उसके व्यक्तित्व को जीवंतता प्रदान करते हैं। पूरा कथानक उसी के इर्द-गिर्द रचा गया है। उमा का गोपाल प्रसाद से प्रश्न करना उसके शिक्षित एवं स्वाभिमानी होने का लक्षण है।

शंकर : यह एकांकी का गौण पात्र है। यह एक सामान्य नौजवान है जो स्वास्थ्य और व्यक्तित्व दोनों में कमज़ोर है। पढ़ाई-लिखाई में औसत से भी कम है इसलिए फेल होता है। पिता के आगे दबकर रहता है और आत्मविश्वास और स्वाभिमान की कमी है। पुरुष है इसलिए केवल तनकर बैठने को ही अपना गुण मानता है, हालांकि उसमें रीढ़ की हड्डी ही नहीं है अर्थात् दृढ़ता के साथ अपनी राय व्यक्त करने का साहस ही नहीं है। वह हर वक्त पिता की हाँ में हाँ मिलाता है। पिता ही उसके लिए सबकुछ तय करते हैं। लड़कियों के हॉस्टल में ताक-झाँक के प्रसंग से शंकर की चारित्रिक कमजोरी का पता चलता है।

अन्य पात्रों में प्रेमा और रतन हैं। प्रेमा उमा की माँ हैं जो मानती हैं कि ज़्यादा पढ़ने से दिमाग बिगड़ जाता है। केवल 'स्त्री सुबोधिनी' पढ़ना ही लड़कियों के लिए पर्याप्त है। वह भी स्वीकार करती है कि सुंदरता स्त्री का अनिवार्य गुण है। प्राकृतिक न हो तो बनावटी ही सही।

रतन नौकर है जो बात-बे-बात मालिक की डाँट सुनना रहता है। वह एकांकी में सिर्फ़ आरंभ और अंत में ही दिखाई देता है।

(ग) संवाद-योजना

एकांकी में संवाद अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। इनके माध्यम से एक ओर कथा का विकास होता है दूसरी ओर पात्रों के चरित्र पर प्रकाश पड़ता है। उनका आपसी संबंध भी संवादों के माध्यम

से खुलता है। एकांकी में गत्यात्मक भाषा का प्रयोग किया जाता है इसलिए वर्णन और विवरण की ज़रूरत नहीं होती। यह अभिनय और दृश्यों से परिपूर्ण होती है।

'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के संवाद छोटे, प्रवाहपूर्ण और पात्रानुकूल हैं। एकांकी में हमारा पहला परिचय रतन और रामस्वरूप से होता है। रामस्वरूप रतन को डाँटते हैं, उसका मज़ाक उड़ाते हैं। वह पत्नी प्रेमा को झिड़की देते हैं लेकिन गोपाल प्रसाद की हाँ में हाँ मिलाते हैं।

गोपाल प्रसाद फितरती आदमी है, डींगे हाँकते हैं– ''चार पैसे की ढेर-सी मलाई आती थी, एक बार कुर्सी पर बैठे तो बारह घंटे की सीटिंग हो गई।'' विवाह उसके लिए बिजनेस है।

सबसे प्रभावशाली संवाद उमा के हैं जो उसकी मन:स्थिति को स्पष्ट करते है, ''क्या जवाब दूँ बाबूजी। जब कुर्सी मेज बिकती है तो दुकानदार कुर्सी मेज से नहीं पूछता''।

''क्या लड़कियों के दिल नहीं होता है, कसाई अच्छी तरह देखभाल कर खरीदते हैं।''

''आपके लाडले बेटे की 'रीढ़ की हड्डी' भी है या नहीं।?''

संवादों में आवश्यक विराम चिह्नों का प्रयोग किया गया है। जिनसे उनकी प्रभावोत्पादकता बढ़ गई है। इस प्रकार के प्रयोग से अर्थ में भी नयापन आया है– ''जी, वह तो...।'' इन दो शब्दों के बीच के अंतराल के साथ ही पात्र की मानसिक दशा का भी उद्घाटन होता है। ''..... हाँ! कुछ गाना बजाना सीखा है?'' जैसे बोलने के साथ ही कुछ सोचा भी जा रहा है। एकांकी के अंत में उमा पूछती है– ''जी हाँ, जाइए, ज़रूर चले जाइए! लेकिन घर जाकर जरा यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं-यानी बैकबोन, बैकबोन'' 'बैक बोन' शब्द का दो बार प्रयोग उमा के आवेश को दिखाता है और साथ ही वह बैकबोन पर बल देना चाहती है। यही एकांकी की केंद्रीय संवेदना भी है।

पाठगत प्रश्न 16.2

1. 'क्या लड़कियों का दिल नहीं होता' यह वाक्य है-

   (क) रामस्वरूप का (ख) प्रेमा का

   (ग) उमा का (घ) गोपाल प्रसाद का

2. 'अच्छा तो साहब, फिर बिजनेस की बातचीत हो जाए' इससे पता चलता है कि–

   (क) रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद व्यापार करना चाहते थे

   (ख) गोपाल प्रसाद की नजर में विवाह भी बिजनेस है

   (ग) शंकर और उमा का विवाह बिजनेस है

   (घ) उमा बिजनेस करना चाहती थी

3. 'झुकी कमर इनकी खासियत है।' किसके बारे में कहा गया है–

(क) शंकर के (ख) रामस्वरूप के

(ग) गोपाल प्रसाद के (घ) रतन के

4. निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे सही (√) और ग़लत के आगे ग़लत (×) का चिह्न अंकित कीजिए–

(i) शंकर हॉस्टल में ताकझाँक करते पकड़ा गया था इसलिए उससे उमा विवाह नहीं करना चाहती।

(ii) प्रेमा को गाने बजाने से चिढ़ है।

(iii) गोपाल प्रसाद की आँखों से चतुराई टपकती है।

(iv) अधिक पढ़ी-लिखी लड़की गीत-संगीत में कमजोर होता हैं।

(v) पढ़ना-लिखना और काबिल होना केवल मर्दों का काम है।

(vi) दुनिया की बहुत सारी बातें/नियम केवल मर्दों के लिए है।

(घ) उद्देश्य

यह एकांकी वैवाहिक संबंधों में व्याप्त कुरीति की ओर संकेत करती है इसके अंतर्गत विवाह में स्त्रियों को महत्व प्रदान न करना और पुरुषप्रधान समाज का वर्चस्व शामिल है। समाज की इस मानसिकता में बदलाव लाकर स्त्रियों के प्रति संवेदनशील बनना इस एकांकी का मुख्य उद्देश्य है। विभिन्न पात्रों के संवादों के माध्यम से विसंगति को उभारा गया है। उमा के माध्यम से एकांकीकार ने स्त्री के आक्रोश को भी अभिव्यक्त किया है और अपने अधिकारों के प्रति सजग दिखाया है। वह कहती है– ''क्या लड़कियों के दिल नहीं होता? क्या उनके चोट नहीं लगती? क्या बेबस भेड़-बकरियाँ हैं, जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख-भालकर...?''

(ङ) देशकाल एवं वातावरण

परिवेश, देशकाल एवं वातावरण एकांकी या नाटक के अभिन्न अंग हैं। एकांकी या नाटक की आलोचना में इसे 'संकलन त्रयी' भी कहा गया है। इसका मतलब यह है कि किसी भी एकांकी नाटक का एक देश होता है अर्थात् स्थान। एक काल-खंड होता है अर्थात् समय और इनके अनुसार एक कार्य होता है। उदाहरण के लिए यदि कोई नाटक राजतंत्र के वातावरण से संबंधित होगा तो उसके परिवेश में राजदरबार, महल, युद्ध आदि दिखाना आवश्यक होगा। रामलीला के प्रदर्शन में आपने देखा होगा कि पर्दों पर राजदरबार, जंगल, आदि के दृश्य अंकित होते हैं। इससे दर्शकों को 'प्रतीति' (मानने/स्वीकारने) में सुविधा होती है।

इस एकांकी का आरंभ मामूली ढंग से सजे हुए एक कमरे से होता है। यह कमरा परिवार की सामाजिक हैसियत और आर्थिक स्थिति की ओर भी संकेत करता है। जहाँ लड़की को देखने के लिए लड़केवाले आने वाले हैं। इसलिए तैयारियाँ हो रही हैं–रामस्वरूप और प्रेमा दोनों तनाव में हैं कि सब कुछ ठीक से निबट जाए और उमा का विवाह निश्चित हो जाए। कमरे की सेटिंग बदली जा रही है। नाश्ते की व्यवस्था हो रही है और उमा को इस बीच तैयार होकर आने के लिए कहा जाता है। एकांकी का देश–(स्थान), भारत का कोई भी नगर/कस्बा हो सकता है। काल (समय)-आधुनिक युग का चौथा-पाँचवाँ दशक जिसमें आधुनिक शिक्षा व्यवस्था है, टोस्ट है, बालुशाही नाम की मिठाई है और टैक्स भी है। कमरे में पेंटिंग है, फोटो है और हारमोनियम है।

(च) भाषा-शैली

एकांकी की भाषा सरल और प्रभावोत्पादक है। भाषा पात्रानुकूल है और भाषा में व्यंग्य, कटाक्ष, तीखापन और पैनापन है। एकांकी में मुहावरों और लोकोतियों का सार्थक प्रयोग हुआ है। इससे अर्थ की संप्रेषणीयता एवं भाषा के सौंदर्य एवं प्रभाव में अभिवृद्धि हुई है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं- 'बाप सेर है तो लड़का सवा सेर', 'कानों में भनक पड़ना' इत्यादि।

(ज) शीर्षक

बैक बोन, रीढ़ की हड्डी को कहते हैं, जो शरीर को सीधा रखता है। इस एकांकी में इसका प्रतीकात्मक प्रयोग है। यह स्वाभिमान, चारित्रिक गुण और शारीरिक सुंदरता का प्रतीक है। शंकर में इन गुणों का अभाव है। यह शीर्षक इसी की ओर संकेत करता है इसलिए सार्थक और उपयुक्त है।

(छ) रंगमचीयता

एकांकी अभिनय की विधा है इसलिए इस एकांकी में भी रंगमंच की सभी विशेषताएँ हैं, जैसे- स्पष्ट निर्देश, छोटे-छोटे संवाद, एक के बाद दूसरा दृश्य, प्रभावी भाषा एवं रोचक उत्तर-प्रत्युत्तर, कटाक्ष, व्यंग्य आदि।

अत: रंगमचीयता की दृष्टि से भी यह एक सफल एकांकी है।

16.3 आपने क्या सीखा : चित्र प्रस्तुति

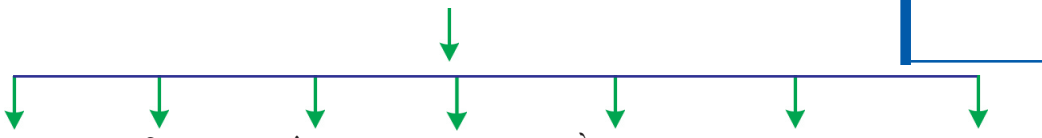

कथावस्तु	चरित्र-चित्रण	संवाद-योजना	उद्देश्य	देशकाल और वातावरण	भाषा-शैली	रंगमंचीयता
- रामस्वरूप के घर पर लड़की दिखाने का दृश्य - गोपाल प्रसाद और लड़के का आगमन - लड़की उमा का आक्रोश	- उमा का प्रभावी व्यक्तित्व - गोपाल प्रसाद और उनके बेटे शंकर का दकियानूसी स्वभाव - रामस्वरूप मध्यमवर्गीय मानसिकता वाले और सुविधाजीवी	- संवाद छोटे, प्रभावपूर्ण और पात्रानुकूल आवश्यक विराम चिह्नों का प्रयोग	- वैवाहिक संबंधों में कुरीतियों पर प्रहार - स्त्रियों के प्रति संवेदनशीलता - दकियानूसी व्यवस्थाओं पर प्रहार	- सामान्य मध्यमवर्गीय परिवार का घर विवाह प्रकरण का चित्र	- भाषा सरल एवं प्रभावी तथा पात्रानुकूल तद्भव का प्रयोग तथा व्यंग्य एवं पैनापन मुहावरों का प्रयोग	- स्पष्ट निर्देश - दृश्यविधान - संवाद छोटे - भाषा प्रभावी

16.4 सीखने के प्रतिफल

- अपने परिवेशगत अनुभवों पर अपनी स्वतंत्र और स्पष्ट राय व्यक्त करते हैं।
- प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं।
- सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र एवं भाषा-संबंधी) के प्रति सकारात्मक एवं विवेकपूर्ण समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।
- भाषा-कौशलों के माध्यम से जीवन-कौशलों को आत्मसात करते हैं और अभिव्यक्त करते हैं।

16.5 योग्यता विस्तार

लेखक परिचय : जगदीशचंद्र माथुर

जगदीशचंद्र माथुर का जन्म 16 जुलाई, 1917 में हुआ। 1941 में आईसीएस परीक्षा उत्तीर्ण कर

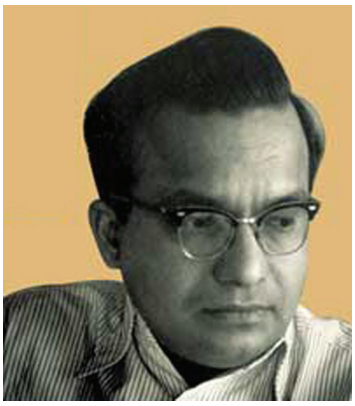

चित्र 16.2 : जगदीशचंद्र माथुर

बिहार में शिक्षा सचिव के अतिरिक्ति अन्य महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन। हिंदी नाटककार के रूप में विशेष प्रसिद्धि मिली। लयात्मक एवं अर्थपूर्ण गद्ध लेखन की वैशिष्टय। अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनों तथा संस्थानों के प्रेरक।

रचनाएँ: एकांकी संग्रह – भोर का तारा, ओ मेरे सपने, मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी। नाटक – कोणार्क, बंदी, शारदीया, पहला राजा, दशरथ नंदन। कठपुतली नाटक – कुँवर सिंह की टेक, गगन सवारी। रेखाचित्र-संस्मरण – दस तस्वीरें, जिन्होंने जीना जाना। समीक्षा – परम्पराशील नाटय। जनसंचार – बहुजन संप्रेषण के माध्यम। सम्मान – विद्यावारिधि, कालिदास अवार्ड, बिहार राजभाषा पुरस्कार, हावर्ड विश्वविद्यालय के विजिटिंग फेलो एवं अनेक परियोजनाओं से संबद्ध।

16.6 पाठांत प्रश्न

1. रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद बात-बात पर, ''एक हमारा जमाना था...'' कहकर अपने समय की तुलना वर्तमान समय से करते हैं। इस प्रकार की तुलना करना कहाँ तक तर्कसंगत है?
2. रामस्वरूप द्वारा अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाना और उसे छिपाना – यह विरोध ाभास उनकी किस विवशता को उजागर करता है?
3. अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप उमा से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे हैं वह उचित क्यों नहीं है?
4. गोपाल प्रसाद विवाह को 'बिजनेस' मानते हैं और रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्च शिक्षा छिपाते हैं। क्या आप मानते हैं कि दोनों ही समान रूप से अपराधी हैं? अपने विचार लिखिए।
5. ''....आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं...'' उमा इस कथन के माध्यम से शंकर की किन कमियों की ओर संकेत करना चाहती है?
6. शंकर जैसे लड़के या उमा जैसी लड़की-समाज को किस प्रकार के व्यक्तित्व की ज़रूरत है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
7. 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
8. कथावस्तु के आधार पर आप किसे एकांकी का मुख्य पात्र मानते हैं और क्यों?
9. एकांकी के आधार पर रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

10. इस एकांकी का क्या मुख्य उद्देश्य क्या है? लिखिए।

11. समाज में महिलाओं को उचित गरिमा दिलाने हेतु आप कौन-कौन से प्रयास कर सकते हैं?

12. इस एकांकी में विवाह की किस समस्या को प्रस्तुत किया गया है?

13. उमा की किन्हीं दो चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

14. गोपाल प्रसाद व शंकर महिलाओं के उच्च शिक्षित होने का विरोध करते हैं? आप इस विचार से कहाँ तक सहमत हैं?

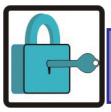

16.7 उत्तरमाला

बोध प्रश्न 16.1

1. (ग) 2. (घ)

पाठगत प्रश्न के उत्तर

16.1 1. (क) 2. (ग)

16.2 1. (ग) 2. (ख) 3. (क)

4. (i) सही (ii) ग़लत (iii) सही (iv) ग़लत
(v) ग़लत (vi) सही